भजन

तर्ज– दिल दीवाना बिन सजना के

क्षर के पार है अक्षर भूमि,अक्षर पार वतन अपना
मूल मिलावे में,रूहें देख रहीं सपना

1– फरामोशी का पर्दा डाला,सुरता रूहों की फिराई
पहले पहल वो खेल देखने,बृज भूमि पर आई
संग रूहों के आके धनी ने,कौल निभाया है अपना
2– ग्यारह साल तो इश्क में बीते,बावन दिन रूसवाई
बंसी सुन फिर योगमाया में,रूहें दौड़ी आई
रास धनी ने ऐसी रचाई,अक्षर को भी सुख दीन्हा
3– बृज और रास के खेल को देख के,रूहें नहीं अघाई
इश्क रब्द करके प्रीतम से,इस माया में आईं
इस माया ने सब कुछ छीना,जो भी था असल अपना
4– जागो अणे जगाओ का,फुरमान थनी ले आए
इश्क इलम दे देकर प्रीतम,अपनी रूहें बुलाये
माया द्वोड़ो सुरता मोड़ो,अपने अर्श में चल रहना